२२

शास्त्रार्थ-जालन्धर

शास्त्रार्थ-जालन्धर

पं० सुन्दरलाल जी के नाम ऋषि दयानन्द के द्वारा लिखे गये १३ मई १८८२ ई० पत्र से ज्ञात होता है कि '**जालन्धर की बहस**' शीर्षक से कोई पुस्तक प्रकाशित हुई थी। निश्चय ही उसमें उस शास्त्रार्थ का उल्लेख था, जो २४ सितम्बर १८७७ ई० (आश्विन कृष्ण २, सं० १९३४ वि० सोमवार) को प्रात: ७ बजे जालन्धर में मौलवी अहमद हुसैन से हुआ था। शास्त्रार्थ का विषय था '**पुनर्जन्म और चमत्कार**'। पंडित लेखराम द्वारा संगृहीत ऋषि के उर्दू जीवन चरित में इस शास्त्रार्थ के विषय में निम्न उल्लेख पाया जाता है—

"यह शास्त्रार्थ पहली बार दिसम्बर १८७७ में पंजाबी प्रेस, लाहौर में छपा था, दूसरी बार जुलाई १८७८ के 'आर्य दर्पण' में छपा, तीसरी बार मिर्जा महोदय ने अपने वजीर प्रेस, स्यालकोट में छपवाया, चौथी बार लाहौर और पांचवी बार आर्यसमाज अमृतसर ने १८८६ ई० में छपवाया। खुद मुसलमानों का फैसला है कि मौलवी साहब कामयाब नहीं हुये और करामात सिद्ध नहीं कर सके।"

पं० गोपाल शास्त्री शर्मा लिखित 'श्रीमद्दयानन्द दिग्विजयार्क' के प्रथम खण्ड पञ्चम मयूख में फकीर मोहम्मद मीर जामू (मिर्जा?) जालन्धरी द्वारा प्रकाशित उपर्युक्त शास्त्रार्थ की भूमिका छपी है। इसे हम पाठकों के लिए उपयोगी समझकर उद्धृत कर रहे हैं भूमिका की भाषा उर्दू है। कठिन उर्दू फारसी शब्दों का अर्थ पाठकों की सुविधा के लिये टिप्पणी में दिया गया है।

"फकीर मोहम्मद मीर जामू (मिर्जा?) जालन्धरी सभ्यगणों को इस रिसाले[१] के तैयार होने के कारणों से आगाह[२] करता है कि ता० १३ सितम्बर सन् १८७७ को दयानन्द सरस्वतीजी साहब जालन्धर में भी बतौर दौरे[३] के तशरीफ लाये, और जनाब फैजमाब[४] सरदार बावकार विक्रमसिंह

---

१. पुस्तक।
२. परिचित करना
३. भ्रमण करते हुए।
४. परोपकारमूर्ति।

साहब अहलूवालिया की कोठी में करोकश[५] होकर वेद के मुताबिक जिसको वह कलाम इलाही[६] तसव्वुर[७] करते हैं, कथा सुनाने लगे कि फकीर ने सरदार साहब ममदह की खिदमत आलिया[८] में दरख्वास्त[९] की कि स्वामी साहब और मौलवी अहमद हुसैन की गुफ्तगू[१०] भी किसी माकूली मसले[११] में सुननी चाहिये। जनाब ममदह ने पसन्द किया और स्वामीजी ने भी कुबूल करके २४ सितम्बर के ७ बजे सुबह का करार दिया, मौलवी साहब वक्त मुअय्यनह[१२] पर खास व आम हिन्दू व मुसलमान शहर के आ गये। मुबाहसा अर्थात् शास्त्रार्थ हस्त ख्वाहिश[१३] मौलवी साहब मसले तनासुख [१४] और स्वामी जी की मर्जी के मुताबिक मसले करामात[१५] मुकरर हुआ। यानी स्वामीजी तनासुख (पुनर्जन्म) को साबित करें, और मौलवी साहब उनकी तरदीद साबित करें और स्वामी साहिब उसकी तरदीद (खण्डन) करें।

गुफ्तगू शुरू होने से यह बात भी करार पायी कि तुर्फेन (दोनों तर्फ) से कोई शख्स खिलाफ तहजीब (सभ्यता) गुफ्तगू न करेगा और स्वामीजी की तरफ से यह भी प्रकाशित हुआ कि कोई साहब इस गुफ्तगू खत्म होने पर हार जीत तसव्वुर[१६] न करें। अगर करेगा तो मुतअस्सिब (पक्षपाती) और जाहिल[१७] समझा जायेगा, क्योंकि यह मसाइल[१८] ऐसे नहीं हैं कि दो तीन दिन की गुफ्तगू में तसफिया[१९] हो जाय, या हार जीत सतस्वूर हो। मगर हां, जब रिसाला गुफ्तगू बाहमी तबै[२०] होगा (छपेगा) तो खुद हाथ के कंकन को आरसी का मसला होगा और आकिला खुद मेदान्द का जहर।[२१] जो सवाल जवाब होंगे वह बाद दस्तखत लाला अमीचन्द साहब और मुन्शी मोहम्मद हुसैन महमूद तब होंगे (छापेंगे)। बाद खतम

---

५. विराजमान होकर।
६. ईश्वरीय ज्ञान।
७. मानते हैं।
८. शुभ सेवा में।
९. निवेदन किया।
१०. वार्तालाप।
११ उचित विषय।
१२. निश्चित समय।
१३. इच्छानुसार।
१४. पुनर्जन्म।
१५. चमत्कार।
१६. ख्याल न करें।
१७. मूर्ख।
१८. विषय।
१९. निर्णय।
२०. प्रकाशित होगा।
२१. बुद्धिमान् स्वयं इसको पढ़कर निर्णय कर सकेंगे।

होने गुफ्तगू के मौलवी साहब की तरफ से खिलाफ अम्ल आलमा सरजद[२२] हुआ, और वह यह कि बाद तमाम होने गुफ्तगू के मौलवी साहब इमाम नासिरुद्दीन के दरवाजे पर गये और कुछ फखरिया बाज सुनाकर[२३] मुसलमान हाजरीन से अपने नमूद के बेवजूद की शुहरत के तलबगार हुये[२४]। अर्थात् मुसलमानों से कहा कि आप लोग अभी कोई ऐसी तजवीज[२५] करें कि जिसमें मैं जीता नहीं तो भी मेरी ही जीत प्रसिद्ध हो जाय। अगर्चि अहलै इल्म[२६] और बजादार[२७] मुसलमान इस शुहरत (मिथ्या-प्रसिद्धि) की ख्वाहिश को जाहिलों का खेल समझकर किनाराकश[२८] हो गये, मगर जुलाहे आदि वे लोग जो मुर्ग, लाल और बटेर और अमन वगैरह की लड़ाई के आदी और हारजीत के शुहरत के शायक हैं,[२९] उन्होंने मौलवी साहिब को बाजीयफता[३०] करार दिया, और घोड़े पर चढ़ा कर शहर के गलीकूचों में खूब फिराया और जीत हार का गुल मचाया। मगर खास वजादार और मुअज्जिज[३१] आदमियों ने इसे बहुत नापसन्द किया।''

इस[३२] मुबाहिसे की 'सवाल जवाब' नाम की एक किताब है, उसकी दीवाचा अर्थात् भूमिका की यह नकल है, जो ऊपर लिखी है। चूंकि इसके देखने ही से असल हाल खुल जाता है, इसलिये अगाड़ी से सवाल जवाब नहीं लिखे गये। उक्त किताब के अन्त में बड़े दो प्रतिष्ठित रईसों ने यह इबारत लिख दस्खत किए हैं कि हमारे रौबरू जो मरातिब गुफ्तगू मुअय्यन हुए थे, वह वाकई यही थे जो दीबाचा में दर्ज हैं।

द० लाला अमीचन्द साहब **द० मोहम्मद हुसैन महमूद**

दयानन्द-शास्त्रार्थ-संग्रह (संगृहीता-कविराज रघुनन्दन सिंह निर्मल) के पृष्ठ ११४-१२३ के अनुसार इस शास्त्रार्थ का पाठ, जो पं० लेखराम द्वारा संगृहीत उर्दू जीवन चरित पर आधृत है, यहां आगे 'शास्त्रार्थ-जालन्धर' शीर्षक से दिया जा रहा है।

---

२२. विद्वानों को परिपाटी के विरुद्ध जो कार्य हुआ।
२३. प्रशंसात्मक उपदेश देकर।
२४. प्रशंसा के इच्छुक हुये।
२५. व्यवस्था।
२६. विद्वान्।
२७. समझदार।
२८. पृथक् हो गये।
२९. ख्याति के इच्छुक।
३०. विजयी।
३१. प्रतिष्ठित।
३२. यहाँ से अगली पंक्तियां पं० गोपालदास की हैं।

शास्त्रार्थ-जालन्धर

[चमत्कार के विषय में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी और मौलवी अहमद हुसैन साहब के मध्य होने वाले प्रश्नोत्तर]

स्वामी—चमत्कार आप किसको कहते हैं?

मौलवी—मनुष्य के स्वभाव के विरुद्ध जो अद्भुत कार्य मनुष्य से सम्पन्न हो।

स्वामी—स्वभाव आप किसको मानते हैं?

मौलवी—मनुष्य की प्राकृतिक इच्छा को स्वभाव कहते हैं।

स्वामी—जो मनुष्य की शक्ति से बाहर है, वह किस प्रकार उससे हुआ?

मौलवी—मनुष्य से होने वाले कार्य दो प्रकार के हैं—एक तो वह कि मनुष्य को जिनका प्रकट करने वाला कहा जाता है; और दूसरे वह कि मनुष्य स्वयं जिनका कर्त्ता होता है। पहली प्रकार के कार्यों में मनुष्य को वास्तविक कर्त्ता नहीं समझा जाता। उदाहरणार्थ जैसे कठपुतली का नाच। ऐसे कार्य खुदा की ओर से मनुष्य के द्वारा प्रकट होते हैं।

स्वामी—सब मनुष्यों में यह दोनों प्रकार के कार्य हैं, अथवा किसी एक में?

मौलवी—प्रत्येक में नहीं, कुछ में होते हैं।

स्वामी—ईश्वर उल्टे काम कर और करा सकता है वा नहीं?

मौलवी—मनुष्य के स्वभाव के विरुद्ध करा सकता है, परन्तु वह काम ईश्वर के स्वभाव के विरुद्ध नहीं होता, और स्वयं अपने विरुद्ध नहीं होता।

स्वामी—ईश्वर के काम उल्टे होते हैं वा नहीं?

मौलवी—खुदा के कार्य कभी उसके स्वभाव के विरुद्ध नहीं होते, यद्यपि मनुष्यों के स्वभाव की अपेक्षा वह विरुद्ध समझे जा सकते हैं।

स्वामी—चमत्कार सृष्टि के स्वभाव के अनुसार होता है वा नहीं अर्थात् प्रकृति की इच्छा के विरुद्ध?

मौलवी—चमत्कार में यह आवश्यक नहीं कि समस्त सृष्टि के स्वभाव के विरुद्ध हो, यद्यपि यह सम्भव है कि किसी नबी (पैगम्बर) या वली (ईश्वर को प्राप्त करने वाला) से कोई ऐसा कार्य हो कि जो समस्त सृष्टि के अनुकूल न हो।

स्वामी—चमत्कार किसी ने दिखाया अथवा दिखावेगा, इसका क्या प्रमाण है?

मौलवी—यह प्रश्न ऐसा है जैसा कहा जावे कि किसी मुख पर जो दाढ़ी आई है, उसके आने का क्या प्रमाण है? जब चमत्कार के विषय में यह कह दिया गया कि वह कार्य जो मनुष्य से मनुष्य के स्वभाव के विरुद्ध हो। उसका कार्य मनुष्य के स्वभाव के विरुद्ध होता है, यही चमत्कार का प्रमाण है। बहुत से मनुष्यों ने, जो दयालु ईश्वर की सृष्टि में सम्मानित और प्रतिष्ठित हैं और ईश्वर ने जिन को सृष्टि के उपकार के लिए भेजा है, पूर्वकाल में चमत्कार दिखाये और भविष्य में भी दिखायेंगे। जैसा कि अल्लाह के रसूल हजरत मोहम्मद साहब ने भी बहुत से चमत्कार करके दिखाये, और ऐसे ही उनसे पूर्व हजरत ईसा ने भी बहुत से चमत्कार करके दिखाये। सिद्धि इस बात की दो प्रकार से होती है—एक तो सच्चे समाचार-दाताओं के द्वारा और दूसरे स्वयं देखने से। जैसा कि ऊपर दोनों महापुरुषों का वर्णन किया। जो लोग उनके समय में विद्यमान थे, उन्होंने स्वयं अपनी आँखों से देखा, और हम लोग जो इस समय के हैं, उनको इसका ज्ञान सच्चे समाचारदाताओं के वचनों और लेखों से हुआ।

स्वामी—यह ठीक-ठीक युक्ति से सिद्ध नहीं हुआ, क्योंकि सुनना कहना और लिखना दो प्रकार से होता है—सच्चा और झूठा। अब यह चमत्कार की बात सच्ची है, इसका क्या प्रमाण है? जैसे कार्य को देख के कारण की पहचान होती है, अर्थात् नदी के प्रवाह को देखकर विदित होता है कि ऊपर वर्षा हुई है; इसी प्रकार चमत्कार हुआ, इसकी सिद्धि में इस समय क्या युक्ति है? कदाचित् वह झूठा ही लिखा कहा अथवा सुना हो, क्योंकि जैसे अब कोई स्वार्थी मनुष्य झूठी बातों से बहका सुना कर अपना प्रयोजन सिद्ध करता है (वैसे ही यह भी हो) जैसे इस समय में भी दो चार चमत्कारिक अवतार हुये हैं। आगरे में शिवदयाल और रामसिंह कूका, जो काले पानी चले गये हैं। एक अकलकोट का स्वामी

दक्षिण में विद्यमान है, और एक देव मामलादार ने सात दिन वैकुंठ में रहकर फिर आकर सुनाया कि मैं नारायण से बात करके आया हूँ, और जो-जो आज्ञा हुई वह तुमको सुनाता हूं। अब लाखों मनुष्य उनके चरणों में इतना नमस्कार करते हैं कि उसका पैर सूज गया है। जैसे यह बात अब झूठ इन्द्रजालवत् है, ऐसी पहले भी होगी। अब इस समय इतने मनुष्यों के बीच में कोई चमत्कार दिखाने वाला विद्यमान हो तो दिखलाइये, और जो अब नहीं तो पहले भी नहीं था, और आगे भी नहीं होवेगा। क्योंकि कार्य को देखे विना कारण की सिद्धि नहीं होती अथवा कारण के देखे विना कार्य की।

मौलवी—जब यह सिद्ध हो चुका कि चमत्कार पवित्र ईश्वर का एक कर्म है, यद्यपि मनुष्य की अपेक्षा से वह असम्भव होता है, तथापि परमात्मा की अपेक्षा से वह असम्भव नहीं, क्योंकि यदि खुदा की अपेक्षा से वह असम्भव हो जाये तो उड़ना पक्षी का कभी न पाया जाये। इसके अतिरिक्त स्वभाव के विरुद्ध समस्त कर्म यद्यपि मनुष्य की अपेक्षा से असम्भव दिखाई देते हैं, परन्तु परमात्मा की अपेक्षा से असम्भव नहीं है। जब खुदा एक के बारे में वह अवसर उत्पन्न करता है, तो दूसरे शरीर के बारे में भी उत्पन्न कर सकता है। इसका अस्वीकार करना मानो परमात्मा की शक्ति का अस्वीकार करना है। यदि समाचार प्रत्येक चीज का झूठ हो तो हमको चाहिए कि कलकत्ता, लंदन अथवा कोई नगर—जिसको हमने अपनी आंखों से नहीं देखा है—उसका विश्वास न करें। इसलिए सिद्धि चमत्कार की इसी प्रकार से है, जिस प्रकार आप वेद को सिद्ध करते हैं, अर्थात् जिससे आप यह कह सकते हैं कि वेद वही पुस्तक है जो ईश्वर की ओर से आई थी, अथवा उस पर कोई मुहर खुदा की लगी हुई नहीं है, जिससे कहा जावे कि यह वेद वही पुस्तक है। वेद सिद्धि में जो युक्तियां आप देंगे, वही चमत्कार के विषय में भी होंगी।

स्वामी—मैंने यह पूछा था कि ईश्वर ने अमुक-अमुक व्यक्ति के द्वारा चमत्कार दिखाये—इसका क्या प्रमाण है? चमत्कार परमेश्वर अपने स्वभाव के विरुद्ध नहीं करता, इसका दृष्टान्त सब सृष्टि का रचना, धारण करना, प्रलय करना आदि है। वह न्याय, दया तथा अनन्त विद्या वाला है—कभी अपने स्वभाव के विरुद्ध नहीं करता। इसका उदाहरण समस्त सृष्टि है। जैसे इस समय मनुष्य का पुत्र मनुष्य ही होता है, पशु नहीं होता।

इसी प्रकार परमेश्वर के काम में कभी भूल नहीं रहती। इसीलिए परमेश्वर की शक्ति मानना चमत्कार पर अवलम्बित नहीं। और जो कोई चमत्कार मानता है, वह वर्त्तमान समय में किसी चमत्कार दिखाने वाले का उदाहरण दे और परमेश्वर की शक्ति की भी कुछ न कुछ सीमा है, जैसे ईश्वर मर नहीं सकता, अज्ञानी नहीं हो सकता, बुरा काम नहीं कर सकता, क्योंकि वह न्यायकारी और अविनाशी है। यह उदाहरण चमत्कार पर लागू नहीं हो सकता, क्योंकि कोई कहे कि बम्बई नहीं, तो वह बराबर बम्बई को दिखा सकता है। ऐसे ही जो वह उदाहरण सच्चा हो तो बम्बई के समान चमत्कार को भी दिखा दे।

वेद का ईश्वरकृत होना असम्भव नहीं, क्योंकि वह अन्तर्यामी और पूर्ण विद्वान् दयालु और न्यायकारी है। वह बराबर जीवात्मा में अन्तर्यामी रूप से अपना प्रकाश कर सकता है, जैसे इस समय भी बराबर अन्यायकारी की आत्मा में भय और लज्जा और न्यायकारी की आत्मा में हर्ष तथा उत्साह का प्रकाश करता है। इसलिए वेद का उदाहरण चमत्कार से सम्बन्धित नहीं। और मेरा अभिप्राय इस विषय के बारे में कि यह पुस्तक ईश्वरकृत है—यह है कि जैसा ईश्वर का स्वभाव, जैसा सृष्टि का क्रम प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध है, और अनन्त विद्या का प्रकाश निर्दोषता आदि है, ईश्वर की रचना सिद्ध करने में सब मुहरें हैं। और जो आप कहें कि और प्रकार की मुहर चाहिए तो पृथिवी, सूर्य, चन्द्र और मनुष्य पर ईश्वरकृत होने की मुहर क्या है? जब मुहर से ईश्वर की रचना सिद्ध करनी है, तो कहीं मुहर दिखाई नहीं देती। ईश्वर का स्वभाव क्या है? जो ईश्वर मनुष्य के स्वभाव से उल्टा करा सकता है, तो किसी मनुष्य को पांव से खिलाया और पिलाया है, और मुख से पांव का काम लिया है या लिवाया है? मुझको ऐसा विदित होता है कि सब सम्प्रदाय वालों ने यह चमत्कार तथा भविष्यवाणी जैसे कि रसायन आदि का लोभ दिखा के बहुत लोगों को फंसाया है। परमेश्वर कृपा करे, सबके आत्मा में विद्या का प्रकाश हो कि मनुष्य ऐसे जाल-फन्दों से छूट कर सत्य को मानें और झूठ से अलग रहें।

मौलवी—हम पहले कह चुके हैं कि चमत्कार का कार्य मनुष्य के स्वभाव के विरुद्ध कराना असम्भव बात नहीं है, जिससे कहा जावे कि परमात्मा की शक्ति से बाहर है। यदि किसी को सन्देह हो तो मक्का नगर

अथवा स्याम देश में जाकर उन चालीस मनुष्यों को देख ले कि जो चमत्कार के दिखाने वाले हैं। वेद के अतिरिक्त ऐसी बहुत सी पुस्तकें हैं, जिनको कह सकते हैं कि मनुष्य के स्वभाव के विरुद्ध हैं। जैसे शिक्षा के विषय में 'गुलिस्तां'[१] और 'बोस्तां' इत्यादि। किन्तु यह कहना कि इसमें सब विद्यायें हैं—यह दावा युक्तिशून्य है, क्योंकि इसमें इल्मे इजतराब (उद्विजन-विद्या) कहां हैं? अनोखी बातों का ज्ञान और निर्मित पदार्थों के ईश्वरकृत होने का प्रमाण यह है कि वह निर्माण किये हुए हैं, और यह निर्माण ही मानो खुदा की मुहर है। यह पुस्तक तौरेत के काल से निस्सन्देह पहले की है। इसमें वह समाचार है जो आज के दिन प्राप्त होता है। पुस्तक दानियाल अध्याय ११ पाठ १० से १९ तक भी प्रमाण है कि वह भविष्यवाणी सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखी गई थी, अब पूरी हुई। दूसरे कुरान शरीफ के बारे में मुसलमानों का तेरह सौ वर्ष से सारे सम्प्रदायों के विरुद्ध यह दावा है कि इस कुरान शरीफ के समान एक पंक्ति भी बना कर कोई मनुष्य दिखावे। जैसा कि—

''फातू बिसूरतिम् मिम्मिस्लिहि''

तो इसकी सी एक सूरत ले आओ। अब तक किसी से बना नहीं, न बनेगा। यदि पंडित साहब को यह चमत्कार स्वीकार नहीं तो इसके समान एक पंक्ति बनाकर दिखायें। चमत्कार का प्रदर्शन मानों हमने इस सभा में कर दिया। अब हम पवित्र परमात्मा से यह प्रार्थना करते हैं कि वह समस्त सृष्टि को दृढ़ मार्ग पर लावे, और उनकी दृष्टि से पक्षपात को दूर करें।

पुनर्जन्म के विषय में प्रश्नोत्तर

मौलवी—वर्त्तमान आकार के विना सत्ता का होना सम्भव नहीं। जब आकार की सत्ता विनाशी है, तो अवश्य प्रकृति भी नाशवान् होनी चाहिये, क्योंकि प्रकृति को सत्ता आकार के द्वारा प्राप्त हुई। द्रव्य की अपेक्षा द्रव्य का कारण प्रधान होता तो पुनर्जन्म मानने वालों के लिये जगत् का विनाशी मानना आवश्यक हो जाता है, परन्तु उन्होंने ऐसा माना था कि वह सनातन है।

१. गुस्लितां और बोस्तां शेखसादी द्वारा रचित फारसी भाषा की दो प्रख्यात पुस्तकें हैं।

स्वामी—आकृति दो प्रकार की होती है—एक ज्ञान से ग्रहण होती है, और एक चक्षु आदि इन्द्रियों से। कारण में ही आकृति की स्थिति है, परन्तु वह इन्द्रियों द्वारा ग्रहण नहीं होती। क्योंकि जो सूक्ष्म वस्तु होती है, जब वह स्वयं ही नहीं दिखाई देती, तो उसका आकार क्या दिखाई देगा? और जो कारण में आकृति न हो तो कार्य में नहीं आ सकती, क्योंकि जो कारण के गुण हैं, वही कार्य में आते हैं। जैसे एक तिल के दाने में तैल होता है, वह करोड़ों दानों में भी बराबर होता है। लोहे के एक अणु में तैल नहीं होता, तो वह मन भर में भी नहीं होता। जो वस्तु नित्य है उसके गुण भी नित्य हैं। कारण का होना न होना नहीं कहा जाता—वह तो सनातन है। और जो वस्तु सनातन है उसकी आकृति भी कारणावस्था में सनातन है। आकृति विना द्रव्य के पृथक् नहीं रह सकती। वह आकृति उसी द्रव्य की है, इससे सिद्ध है कि कारण सनातन है।

मौलवी—यह नहीं कि जो चीज सिवाय किसी चीज के न पाई जाये, तो वह उसका रूप ही हो। उदाहरणार्थ जैसे चेष्टा हाथ और चाबी की। चेष्टा चाबी की विना हाथ की चेष्टा के नहीं पाई जाती, प्रत्युत जब चेष्टा चाबी की होगी तो चेष्टा हाथ की होगी, और जब चेष्टा हाथ की होगी तो चेष्टा चाबी की होगी, अर्थात् इन दोनों चेष्टाओं में कोई काल किसी का किसी से पहले या पीछे नहीं निकलता। और निस्सन्देह उत्कृष्ट बुद्धि जानती है कि कुंजी की चेष्टा विना हाथ के नहीं, अर्थात् चेष्टा कुंजी की हाथ की चेष्टा पर निर्भर है, यद्यपि वर्तमान समय में इकट्ठी है। ऐसे ही प्रकृति और उसका रूप हे। यद्यपि काल में एकता है, परन्तु बुद्धि इस बात को जानती है कि प्रकृति के आकार की अपेक्षा प्रकृति सनातन है। क्योंकि गुणी और माननेवाला गुण और माने हुये की अपेक्षा सनातन होता है। प्रकृति की सत्ता अर्थात् उसका अनुभव होना और दिखाई देना किसी चीज के लगने से होता है। या तो आकृति के लगने से होता या किसी और चीज के लगने से। प्रत्येक अवस्था में वह पदार्थ जिसके लगने से वह आकृति संसार में इस प्रकार स्थित हुई कि अनुभव हो और दिखाई दे, वह किसी ऐसे कारण से हुई जो पीछे से आकर प्रकृति को लगा।

और जो उत्तर में यह लिखा गया कि कारण का होना अथवा न होना नहीं कहा जाता, तो यह चीज अद्‌भुत है जिसका उपादान कारण में होना या न होना नहीं कह सकते। वह वस्तु जिसका उपादान कारण ऐसा हो,

उसका होना किस प्रकार हो सकता है? अर्थात् वर्त्तमान वस्तु अभाव से नहीं बन सकती। और यदि उसके सनातन होने से कोई मनुष्य यह कहे कि वह विद्यमान भी होगा, तो यह गलत है,इसलिए कि अभाव से भाव का होना। उदारणार्थ जैसे कोई कहे कि ''जैद'' के तत्वों को एक विशेष आकार प्राप्त हुआ है, जिसके कारण उसका ''जैद'' नाम रखा गया, तो वह विशेष आकार इस आकार से पहले कभी विद्यमान न था, इसलिये उसको अर्थात् उसके अभाव को सनातन कहा जावेगा। रूप के जो दो प्रकार कहे—एक वह कि जिसको आकृति कहते हैं, और एक उसके अतिरिक्त, इससे विदित हुआ कि आकार प्रकृति रहित है।

स्वामी—स्वाभाविक गुण रूप आदि वस्तु के पीछे कभी नहीं होते, और जो पीछे हो उसको स्वाभाविक नहीं कहते। जैसे लड़के का होना और अग्नि के परमाणुओं का स्वाभाविक अतीन्द्रिय रूप अर्थात् आंख से अनुभव न होना स्वाभाविक सब काल उसके साथ है। निमित्त कारण से संयोग पर परमाणुओं का संयोग करने से स्थूल कार्य होने से उसका इन्द्रिय-ग्राह्य रूप प्रकट होता है। जैसे जल के परमाणु आकाश में उड़कर ठहरते हैं, और जब तक बादल नहीं बनते तब तक नहीं दीख पड़ते।

हमारा यह अभिप्राय नहीं कि वह प्रकृति नहीं है या प्रकृति का स्वाभाविक गुण नहीं है। उदाहरणार्थ जैसे लड़के का न होना। जैसा कार्य में यह होना या न होना गुण है, वैसा कारण में नहीं है। जो कारण और कारण के स्वाभाविक गुण हैं वह अनादि हैं। कार्य वह है कि जो संयोग से हो, और वियोग से पीछे न रहे। वह जो एक संयोगजन्य आकृति है, वह कार्य की आकृति कहलाती है। उसका प्रवाह से अनादिपन है, स्वरूप से नहीं। और ईश्वर जो कि सर्वज्ञ है उसका निमित्त कारण अर्थात् बनाने वाला है। उसके ज्ञान में सदा है और रहेगा। (अन्तिम वाक्य का उत्तर ऊपर आ गया)।

मौलवी—पदोत्कर्ष अर्थात् पहले होना दो प्रकार का होता है—एक निजी और एक सामयिक। निजी जैसा कि हम पहले वर्णन कर चुके हैं कि चेष्टा हाथ की और चाबी की, और ऐसा ही उत्कर्ष गुणी का अपने समवायी गुणों पर उदाहरणार्थ उत्कर्ष पानी का अपने बहने पर। उत्कृष्ट बुद्धि जानती है कि बहने की स्थिति पानी के साथ है। इस उत्कर्ष को निजी उत्कर्ष कहा जावेगा। कहने का अभिप्राय यह कि उत्कर्ष गुणी का

उन गुणों पर जो उसके अपने गुण हैं, निजी उत्कर्ष कहलाता है। क्योंकि गुणी अपने गुणों से अवश्य उत्कृष्ट होता है। और सन्देह तब उत्पन्न होते हैं, जब उत्कर्ष सामयिक हो। दूसरा सामयिक उत्कर्ष वह है—जैसा कि बाप का अपने बेटे पर होता है। गुणी का गुणों से रिक्त होना तब आवश्यक होता है जब उत्कर्ष सामयिक हो। तात्पर्य यह है कि अपने आकार पर जो उत्कर्ष प्रकृति का है वह निजी उत्कर्ष है, क्योंकि गुणी गुणों से उत्कृष्ट होना चाहिये।

स्वामी—द्रव्य उसको कहते हैं कि जिसमें गुण, क्रिया, संयोग, वियोग होने का स्वभाव पाया जावे, परन्तु जो द्रव्य परिच्छिन्न अर्थात् पृथक्-पृथक् हैं, उनका यह लक्षण है। जो विभु व्यापक द्रव्य है वह संयोग वियोग के स्वभाव से पृथक् होता है। किसी व्यापक में गुण ही प्रधान होते हैं, क्रिया नहीं। जैसे कि परमेश्वर उसमें संयोग वियोग नहीं होता परन्तु क्रिया और गुण हैं, और आकाश, दिशा, काल यह व्यापक हैं परन्तु इनमें क्रिया नहीं, केवल गुण हैं।

मौलवी—यह उत्तर पहले प्रश्न से कोई सम्बन्ध नहीं रखता। क्योंकि इस उत्तर में निजी और सामयिक भेद नहीं किया गया। ज्ञानस्थ आकृति की अपेक्षा से 'जैद' का विशेष आकार का अभाव अर्थात् उसके नियत शरीर का एक नियत काल से जो सम्बन्ध था, उस शरीर की उत्पत्ति के पूर्व उसका पूर्ण अभाव था। और यह विचार जो प्रकट किया गया कि पूर्ण अभाव उस शरीर विशेष का नहीं है—उसकी आकृति ईश्वर के ज्ञान में विद्यमान है, यह बिल्कुल गलत है, क्योंकि ईश्वर के ज्ञान में यह शरीर विशेष तो विद्यमान नहीं, जो तीन हाथ का है। किसी वस्तु के अनादि होने से किसी वस्तु की उत्पत्ति तो सिद्ध नहीं होती। ज्ञानस्थ आकृति के बारे में बात यह है कि ईश्वर का ज्ञान ज्ञानस्थ आकृति के साथ नहीं है, क्योंकि ज्ञानस्थ आकृति वह होती है जो बाहरी वस्तु के देखने से प्राप्त होती है। जब आकार विशेष को अनादि नहीं माना जाता, तो ईश्वर के ज्ञान में वह ज्ञानस्थ आकृति कहां से प्राप्त हुई? यदि कोई वस्तु अनादि थी, तो आपके मन्तव्य के अनुसार प्रकृति अनादि थी, और जिस वस्तु का साधनों द्वारा अनुभव न किया जा सके जैसे कि आप प्रकृति और आकार को मानते हैं कि प्रथम अवस्था में अनुभव के योग्य न था, तो उसका ज्ञान किसी प्रकार भी प्राप्त नहीं किया जा सकता।

क्योंकि किसी पदार्थ को जानने की विधि यही है कि किसी की चेष्टा के द्वारा ज्ञानेन्द्रिय में उसका आकार प्राप्त हो, उसी को ज्ञानस्थ आकृति कहा जाता है। और जहां तक जल के परमाणुओं का सूक्ष्म होकर वाष्प बन जाने का प्रश्न है, तो यद्यपि वह दृष्टिगोचर नहीं होता, फिर भी किसी न किसी चेष्टा के द्वारा वह जानने के योग्य है। प्रत्येक अवस्था में जो आकार इस प्रकार का माना गया है कि जिसका ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा अनुभव नहीं किया जा सकता, तो उसका कोई अस्तित्व ही नहीं है। जब अनादित्व ही गलत सिद्ध हुआ तो पुनर्जन्म कहां रह गया? यदि यूं कहा जाता है कि एक शरीर से दूसरे शरीर में जाने का कारण उसके वे कर्म हैं जो प्रथम शरीर में किये थे, तो यह प्रकट है कि कर्म चेष्टा द्वारा होते हैं और चेष्टा काल पर निर्भर है, और काल का आदि अन्त और मध्य इकट्ठा नहीं रह सकता। इसके अतिरिक्त कर्म जो किसी समय के द्वारा किये गये वह नष्ट हो गये। अथवा दूसरे शरीर से सम्बन्ध किसी उत्कर्षक की ओर से न होगा। जब आत्मा का शरीरों से समान सम्बन्ध है, तो विशेष सम्बन्ध होने से उत्कर्षता विना उत्कर्षक के बाधक होगी, इसके अतिरिक्त इस सम्बन्ध से बहुत सी हानियां उत्पन्न होंगी, क्योंकि विशेषतायें जो प्रथम शरीर में प्राप्त की थी वह दूर हो गई। और उदाहरणतया यदि दूसरा सम्बन्ध कुत्ते अथवा गधे से हो तो उस कुत्ते और गधे के शरीर में वह विशेषतायें प्राप्त नहीं कर सकता जो मनुष्य के शरीर में प्राप्त कर सकता था। अब आपको उचित है कि प्रथम विद्याओं के प्राप्त करने की विधि निश्चित कीजिये, फिर उसके पश्चात् सम्बन्ध का कारण निश्चित किया जावे, तब उस पर आक्षेप किया जा सकता है।

स्वामी—दश इन्द्रियों के विषय में मौलवी साहब का कहना ठीक नहीं, जैसा कि जीवात्मा किसी इन्द्रिय से नहीं देखा जाता? परन्तु अस्तित्व उसका है। जो मौलवी साहब ने कहा कि अनादि वस्तु झूठी है—यह किसने कहा है? क्या यह बात आपने अपने दिल से जोड़ ली है? क्योंकि जब मैं लिखवा चुका कि परमेश्वर, जीव और जगत् का कारण यह तीनों सनातन हैं, इससे अनादित्व सिद्ध है। और अभाव से भाव कभी नहीं होता, यदि कोई कहता है तो उसका प्रमाण नहीं है। गधे और कुत्ते के शरीर में मनुष्य का जीव जाने से मौलवी साहब कहते हैं कि बड़ी हानि होती है, क्योंकि सब कमाई की हुई चली जाती है। यदि मौलवी साहब

ऐसा मानते हैं, तो मौलवी साहब को कभी सोना न चाहिये, क्योंकि निद्रा में जाग्रत् की कमाई सब भूल जाती है। यदि मौलवी साहब कहें कि फिर जागने से यह ज्ञान आ जाता है, तो कुत्ते गधे के शरीर में भी आ जायेगा। और ज्ञान फिर प्राप्त कर सकता है जैसे कि मनुष्य निद्रा से जाग कर करता है। इसलिये मैं जानता हूं कि मौलवी साहिब के भाषण और मेरे भाषण को बुद्धिमान् लोग स्वयं ही देख लेंगे। और एक जन्म इन बातों से सिद्ध नहीं होता, परन्तु पुनर्जन्म सिद्ध है।

हस्ताक्षर अंग्रेजी

ला० अमीचन्द

हमारे समक्ष जो बातचीत के विषय निश्चित हुये, वह वास्तव में यही थे, जो इस भूमिका में लिखे हैं।

हस्ताक्षर—**मौहम्मद हुसैन महमूद**